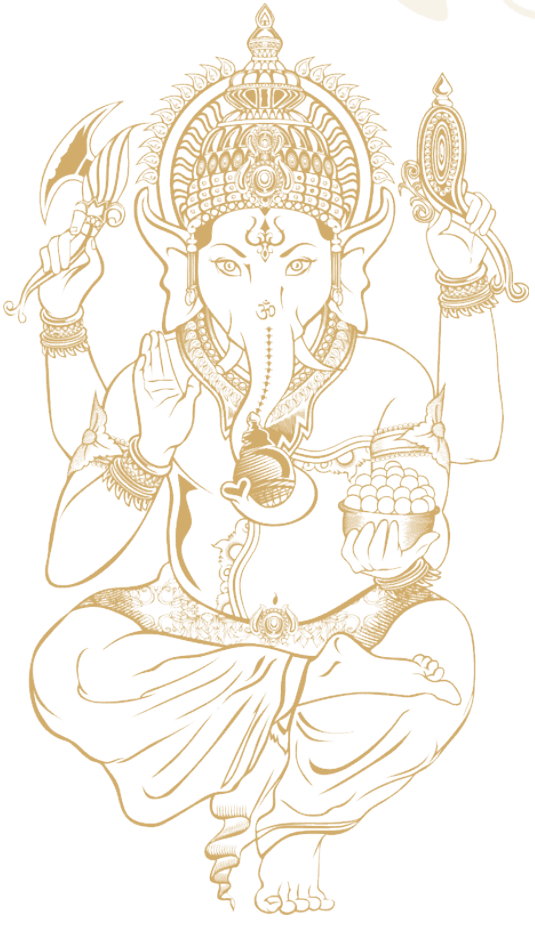

Mr. Princess

03 Apr 2009

01:00 PM

Muzaffarnagar

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120578201**

तिथि 03/04/2009 **समय** 13:00:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Muzaffarnagar **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:59:24
अक्षांश 29:28:00 उत्तर **रेखांश** 77:42:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:19:12 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	01:27:51 घं
वेलान्तर	00:03:17 घं
सूर्योदय	06:06:54 घं
सूर्यास्त	18:38:35 घं
चैत्रादि संवत	2066
शक संवत	1931
मास	चैत्र
पक्ष	शुक्ल
तिथि	9
नक्षत्र	पुनर्वसु
योग	अतिगण्ड
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	मार्जार
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मेष
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	हा-हर्षा
पाया(रा.-न.)	लौह-रजत
होरा	सूर्य
चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी

गुरु 5वर्ष 3मा 3दि
शनि
07/07/2014
07/07/2033

शनि	10/07/2017
बुध	19/03/2020
केतु	28/04/2021
शुक्र	28/06/2024
सूर्य	10/06/2025
चन्द्र	09/01/2027
मंगल	18/02/2028
राहु	25/12/2030
गुरु	07/07/2033

योगिनी

पिंगला 0वर्ष 7मा 27दि
उल्का
29/11/2021
30/11/2027

उल्का	29/11/2022
सिद्धा	30/01/2024
संकटा	31/05/2025
मंगला	30/07/2025
पिंगला	29/11/2025
धान्या	31/05/2026
भ्रामरी	29/01/2027
भद्रिका	30/11/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			07:29:39	कर्क	पुष्य	2	शनि	केतु	---	0:00			
सूर्य			19:41:37	मीन	रेवती	1	बुध	शुक्र	मित्र राशि	2.09	ज्ञाति	पितृ	विपत
चंद्र			28:57:00	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	सूर्य	मित्र राशि	0.92	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल			21:01:01	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	गुरु	सम राशि	1.12	पुत्र	भ्रातृ	जन्म
बुध		अ	23:03:59	मीन	रेवती	2	बुध	चंद्र	नीच राशि	0.64	भ्रातृ	ज्ञाति	विपत
गुरु			25:32:27	मक	धनिष्ठा	1	मंगल	राहु	नीच राशि	1.13	अमात्य	धन	मित्र
शुक्र	व		09:22:29	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	उच्च राशि	1.34	कलत्र	कलत्र	सम्पत
शनि	व		22:28:37	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	शनि	शत्रु राशि	0.97	मातृ	आयु	प्रत्यारि
राहु			12:55:21	मक	श्रवण	1	चंद्र	राहु	मित्र राशि		---	ज्ञान	वध
केतु			12:55:21	कर्क	पुष्य	3	शनि	राहु	मित्र राशि		---	मोक्ष	सम्पत

लग्न-चलित

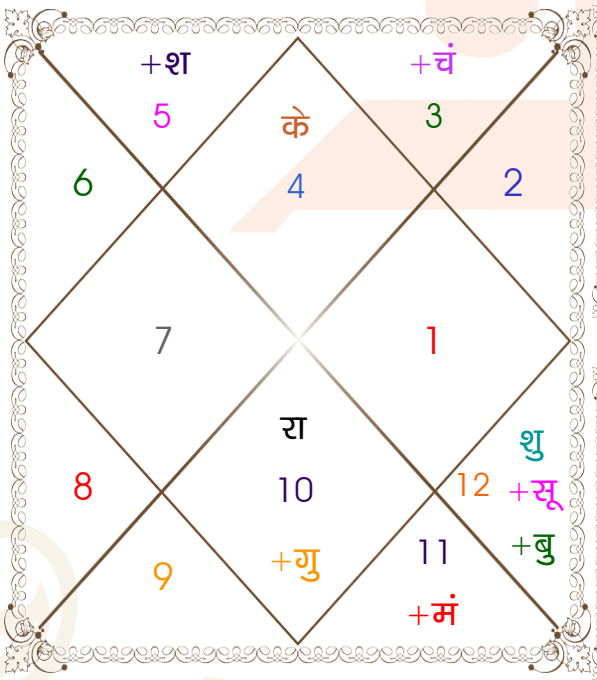

चन्द्र कुंडली

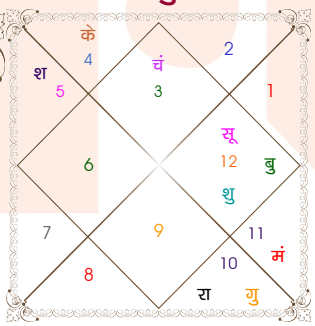

नवमांश कुंडली

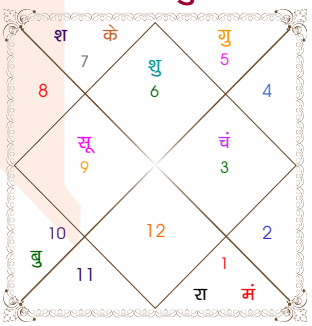

सर्वाष्टकवर्ग

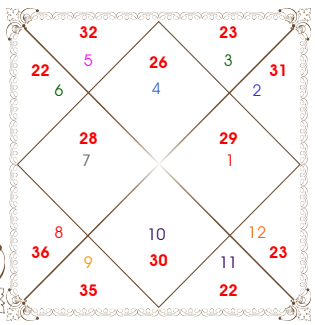

दशमांश कुंडली

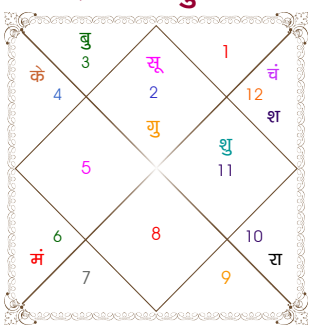

Karshney jyotish karyalay Pt S C Jha Suman
Shobha Sadan 317/1 New Mohan Puri Meerut 250001, U P India
+919837310158
ptsumanjha@gmail.com

नक्षत्रफल

आप पुनर्वसु नक्षत्र के तृतीय चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि मार्जार, गण देव, वर्ण शूद्र, वर्ग मेष तथा नाड़ी आद्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम "ह" अक्षर से शुरू होगा।

आपका स्वभाव अत्यन्त ही शान्त होगा तथा क्लेशादि के समय भी आप पूर्ण रूप से धैर्य रखेंगी व अन्य किसी प्रकार की उतावलेपन का प्रदर्शन नहीं करेंगी। आप समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों से युक्त होकर जीवन यापन करेंगी। शारीरिक दृष्टि से आपका रूप एवं सौन्दर्य दर्शनीय होगा तथा वर्ण भी गौरवर्ण रहेगा। भाग्य हमेशा आपकी कार्य सिद्धियों में सहायक रहेगा। समाज में सभी के भलाई कार्यों में आप तन मन धन से तत्पर रहने के कारण खूब लोकप्रियता को प्राप्त करेंगी। साथ ही जीवन में पुत्र तथा मित्रों का आप को अभाव नहीं रहेगा।

शान्तः सुखी च सम्भोगी सुभगो जनबल्लभः।
पुत्रमित्रादिभिर्युक्तो जायते च पुनर्वसौ।।
मानसागरी

अर्थात् पुनर्वसु नक्षत्र में उत्पन्न जातक, शान्त सुखी, भोगी, सुन्दर, लोकप्रिय तथा पुत्र एवं मित्रों से युक्त होता है।

आपका स्वभाव सुशील तथा चाल चलन उत्तम रहेगा। यदा कदा आप दुष्ट बुद्धि से भी युक्त होंगी तथा दुष्कार्यों की ओर प्रवृत होंगी। साथ ही आपकी इच्छाओं का भी कभी अन्त नहीं होगा। तृष्णातुरता हमेशा बनी रहेगी परन्तु प्रवृति सन्तोषी होगी तथा किसी भी वस्तु की अधिक के स्थान पर कम प्राप्ति पर ही आप को सन्तोष हो जाएगा।

दान्तः सुखी सुशीलो दुर्मेधा रोगभाक् पिपासुश्च।
अल्पेन च सन्तुष्टः पुनर्वसौ जायते मनुजः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पुनर्वसु में उत्पन्न जातक क्लेश की स्थिति में भी सहनशील, सुखी, सुशील, दुष्टबुद्धिवाला, तृषाकुल तथा थोड़े से ही सन्तुष्ट होने वाला होता है।

गूढ़ से गूढ़ बातों का ज्ञान प्राप्त करने में आप सफलता प्राप्त करेंगी साथ ही आप आत्मज्ञानी भी होंगी। आप अपने वैभव तथा बल के कारण समाज में विख्यात होंगी लेखन कार्य आपका प्रियकार्य रहेगा तथा काव्य सृजन में आप सफलता को प्राप्त करेंगी।

गूढात्मा च पुनर्वसौ धनबलविख्यातः कविः कामुकः।
जातकपारिजातः

अर्थात पुनर्वसु में उत्पन्न जातक गूढात्मा, धन तथा बल से विख्यात, कवि तथा कामुक प्रकृति का होता है।

आपके मित्रों की संख्या अधिक होगी तथा शास्त्रज्ञान प्राप्ति में भी आपकी रूचि रहेगी। इसके लिए आप सतत प्रयत्नशील रहेंगी शुभ रत्नों तथा स्वर्ण से निर्मित आभूषणों से आप हमेशा सुसज्जित रहेंगी। आप में दानशीलता का गुण भी विद्यमान रहेगा तथा आप बहुत से सुखसंसाधनों तथा भूमि की स्वामिनी बनेंगी।

प्रभूतमित्रः कृतशास्त्रयत्नः सद्रत्नचामीकरभूषणाढ्यः।
दाता धरित्री वसुभि समेतः पुनर्वसु यस्य भवेत्प्रसूतौ।
जातकाभरणम

अर्थात् पुनर्वसु में उत्पन्न जातक अधिक मित्रों वाला, शास्त्रों का अभ्यास करने वाला, रत्नस्वर्णादि आभूषणों से परिपूर्ण, दान, द्रव्य एवं भूमि से युक्त होता है।

आप लौहपाद में पैदा हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी, दुःखी, धन एवं सुखसंसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करता है परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभ राशि में स्थित है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही प्राप्ति अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील प्रवृति की महिला होंगी तथा नित्य प्रति अपनी इस प्रवृति का अनुपालन करती रहेंगी। आप हमेशा सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप शुभ एवं अच्छे कार्यों में अधिक व्यय करेंगी अनावश्यक या गलत कार्यों पर आप कभी भी व्यय नहीं करेंगी। इसके अतिरिक्त जीवन में विभिन्न प्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों तथा विलासमय वस्तुओं से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

आप मिथुन राशि में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप की आखें थोड़ी लालिमा लिए हुए श्याम वर्ण की तथा बाल घुंघराले होंगे। आपके शरीर के सारे अंग कोमलता लिए पुष्ट तथा सुडौल होंगे एवं नासिका भी उन्नत होगी। विभिन्न प्रकार के शास्त्रों के अध्ययन में आप अभ्यासरत रह कर ज्ञान प्राप्त करेंगी। दूतिका कार्य या सन्देशों के आदान प्रदान में आप निपुणता का प्रदर्शन करेंगी। आप अत्यन्त तीव्र बुद्धि की होंगी तथा अपनी इसी बुद्धि के द्वारा अपने समीपस्थ अन्य जनों की चित्त की बातों को जानने में सफल सिद्ध होंगी। समाज के लोगों से आपका व्यवहार अत्यन्त ही विनयशील एवं प्रशंसनीय रहेगा। आप मधुर वाणी बोलेंगी जिससे अन्य जनों को प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। आप हंसने तथा हंसाने की शौकीन होंगी तथा आजीवन हास्य युक्त रहेंगी। संगीत से आपका अनन्य प्रेम रहेगा तथा नृत्य शास्त्र की आप विशेषज्ञा होंगी।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।
दूतः कुत्रिचद् मूर्धजः पटुमति हास्योड्गित द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।

क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।
बृहज्जातकम्

आपके हाथ में मछली का चिन्ह हो सकता हैं। आपके कद की ऊँचाई पूर्ण होगी। लेखन कार्य में नैसर्गिक रूप से आपकी रूचि रहेगी तथा काव्य सृजन में आप सफलता प्राप्त करेंगी। आप अपने जीवन में समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखसंसाधनों की उपभोग करने वाली होंगी। साथ ही पुरूषवर्ग को आप अपने वश में रखने में सफलता प्राप्त करेंगी।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।
सारावली

आप दीर्घजीवी होंगी तथा सदैव हास्य प्रिय रहेंगी। हंसने तथा हंसाने के कार्य को आप प्रिय समझेंगी। आप घूमने या यात्रा करने में भी उत्सुक रहेंगी तथा घर में रहकर भी सुख की अनुभूति प्राप्त करेंगी।

दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।
जातकपरिजातः

आपकी मित्रता तथा सामाजिक क्षेत्र विस्तृत रहेगा तथा इनमें आप खूब लोकप्रिय रहेंगी। पुरूषों के प्रति आपका तीव्राकर्षण रहेगा तथा उनके मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय समझी जाएंगी। साथ ही आप अपनी प्रतिभा तथा सत्कार्यों से समाज में कीर्ति तथा गौरव भी अर्जित करेंगी।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।
जातकाभरणम्

आप अपने लेखों तथा भाषणों में श्लिष्टयुत स्पष्ट वाक्यों का अधिकांश प्रयोग करेंगी जिससे सामान्य जन भी समझने में सफल रहेंगे आप अपने बन्धुवर्ग के तथा समाज के सभी वर्गों की भलाई के लिए हमेशा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी प्रवृति पित्त कफ से युक्त होगी एवं चाल चलन उत्तम तथा प्रशंसनीय रहेगा।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।
जातक दीपिका

आपके नेत्र हमेशा चंचलता से युक्त रहेंगे। संगीत एवं नृत्य के प्रति आप समर्पित

रहेंगी तथा अपने अच्छे व्यवहार, अच्छे कार्य तथा धन एवं वैभव के द्वारा कीर्ति को प्राप्त करने में सफलता अर्जित करेंगी। अपने मन में एक बार आप जिस बात को सोच लेंगी उसे पूर्णरूप से सम्पन्न करके ही रहेंगी। यह आपके दृढ़संकल्प का परिचायक होगा। इसके साथ ही भाषण देने की कला में भी आप विशेष चतुर होंगी।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।
गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आप देव गण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी वाणी अत्यन्त श्रेष्ठ एवं मधुर होगी जिसे सुनकर श्रोताओं को हर्षानुभूति होगी। आप सरल बुद्धि की स्वामिनी होगी तथा बिना किसी अतिरिक्त परिश्रम से सादगी पूर्ण ढंग से अपने विचारों को प्रकट करेंगी। एवं उसी प्रकार अन्य जनों के विचारों को भी ग्रहण करेंगी। आप सात्विक भोजन करना पसन्द करेंगी तथा इसे रूचिपूर्वक भक्षण करेंगी। गुणों के मध्य भेद करने में आप सफल होंगी । तथा स्वयं विद्वानों द्वारा वर्णित उच्च गुणों से सम्पन्न रहेंगी। साथ ही आपको आजीवन धन वैभव तथा ऐश्वर्य की कमी नहीं रहेगी तथा इससे आप हमेशा सुशोभित रहेंगी।

आपका शरीर सुन्दर, गौरवर्ण, स्वस्थ तथा पुष्ट रहेगा। आप दानी स्वभाव की होंगी तथा अवसरानुकूल इस प्रवृति का निर्वाह करती रहेंगी इससे आपको समाज में मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। आप सादगी पसन्द होंगी तथा कार्य का आडम्बर या दिखावा आपको पसन्द नहीं रहेगा। साथ ही आप एक विदुषी भी हो सकती हैं।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

मार्जार योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से ही पराक्रमी एवं हिम्मत से कार्य करने वाली होंगी। आप अपने समस्त कार्यों को चतुराई से सम्पन्न करेंगी। मीठा भोजन तथा मीठा पेय आपके लिए अभिरूचिकारक होंगे। इनके सेवन से आपको अत्यन्त आनन्दाभूति होगी। भय का आप में सर्वथा अभाव रहेगा तथा निर्भयता पूर्वक जीवन पथ पर चलती रहेंगी। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में दुष्टता का समावेश होगा। अतः दुष्कर्मों को करने में भी आपकी प्रवृति उत्पन्न होगी।

शूरः स्वकार्येदक्षश्च मिष्ठानपान भक्षकः।

निर्भयो दुस्वभावश्च नरो मार्जार योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मार्जार योनि में उत्पन्न बालक वीर, अपने कार्यों को निपुणता से करने वाला, मिष्ठानपान भक्षण प्रेमी तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करती रहेंगी। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। साथ ही जीवन के सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा निर्देश देती रहेंगी। दान पुण्य संबंधी कार्य में भी आप उन्हीं का अनुसरण करेंगी।

आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी परन्तु आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा यदा कदा किसी न किसी बात पर विवाद होता रहेगा परन्तु ये सामान्य मतभेद स्वतः समाप्त हो जाएंगे एवं सामान्य संबंध बने रहेंगे। समय ही उन्हें हमेशा अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा। धन धान्य का वे पूर्ण लाभार्जन करेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार से आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी वे पूर्ण सहयोग एवं प्रेरणा आपको प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा किसी सैद्धान्तिक मतभेद पर इसमें कटुता या तनाव भी परिलक्षित होगा परन्तु कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका सुख दुःख में पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं उन्हें सर्वदा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे अस्वस्थ रहेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में आप समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उन से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग अर्जित करती रहेंगी। धन धान्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा अतः यदा कदा विशिष्ट धन की प्राप्ति आप उनसे कर सकेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह भाव रखेंगी एवं अवसरानुकूल सुख दुःख में उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध भी ठीक ही रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें तनाव तथा कटुता की स्थिति भी उत्पन्न

होगी लेकिन कुछ समय बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनका सहयोग करने के लिए करने के लिए उद्यत रहेंगी।

आपके लिए आषाढ मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां कृष्ण तथा शुक्ल दोनों पक्षों की, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग, सोमवार तृतीय प्रहर तथा धनु राशि स्थित चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले हैं। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय आदि शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही सोमवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें अन्यथा हानि योग बनता हैं। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधा आदि या अन्य अशुभ फल घटित हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको प्रातः तथा सायं काल नित्य नियमित रूप से श्री गणेश जी के दर्शन करने चाहिए तथा बुधवार का भी उपवास करना चाहिए ऐसा करने से आपके अशुभ प्रभाव दूर होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी। साथ ही पन्ना, हरा वस्त्र, मिश्री, घी, गुड़ आदि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।